IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

सरकारी एवं गैर सरकारी विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत श्रवण बाधित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय कानपुर

शोधकर्ता - राहुल कुमार सोनी

शोध निर्देशिका - डॉ. अखिला सिंह गौर

असिस्टेंट प्रोफेसर शिक्षाशस्त्र विभाग डी.ए.वी. कॉलेज कानपुर

सारांश

समस्या के कथन में सरकारी एवं गैर सरकारी विशेष विद्यालयों में अध्यनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है उद्देश्य के रूप मे छात्र एवं छात्राओं का सरकारी एवं गैर सरकारी क्षेत्र के आधार पर उद्देश्यों का अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान के अंतर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है जनसंख्या के रूप में लखनऊ जनपद में स्थित विशेष विद्यालयों को लिया गया है जिसमें कुल 60 छात्र–छात्राओं का चयन सोउद्देश्य नमूनाकरण विधि द्वारा किया गया है श्रवण बाधित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को मापने के लिए उनकी पिछली कक्षा के प्राप्तांको को अध्ययन हेतु लिया गया है एवं अध्ययन के आँकणों का विश्लेषण करने के लिए विभिन्न सांख्यिकी विधियां जैसे मध्यमान मानक विचलन एवं टी टेस्ट आदि का प्रयोग किया गया है।

आँकणों का विश्लेषण एवं व्याख्या के पश्चात निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं-

➢ गैर सरकारी विद्यालयों में अध्यनरत श्रवण बाधित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि सरकारी विद्यालयों में अध्ययन करने वाले श्रवण बाधित विद्यार्थियों से उच्च है।

➢ गैर सरकारी विद्यालयों में अध्यनरत छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि सरकारी विद्यालयों में अध्यनरत छात्रों से उच्च है।

➢ सरकारी विद्यालयों में अध्यनरत छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि गैर सरकारी विद्यालयों में अध्यनरत श्रवण बाधित छात्राओं से निम्न है।

मुख्य शब्द – सरकारी, गैर सरकारी, श्रवण बाधित, शैक्षिक उपलब्धि, टी अनुपात आदि ।

प्रस्तावना-

शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें बालक की अंतर निहित शक्तियों एवं गुणों को बाहर निकाल कर उनका विकास किया जाता है शिक्षा ही व्यक्ति के शारीरिक मानसिक और नैतिक गुणों का विकास करती है जिससे बालक स्वयं अपने परिवार एवं समाज का कल्याण कर सके साथ ही साथ उसमें मानवीय गुणों का विकास भी करती है जिससे मानव संस्कृति को सुंदर एवं संपन्न बनाने की क्षमता उत्पन्न की जा सके जैसा कि हम जानते हैं कि बालक के शिक्षा का आरंभ तो उसके घर से ही हो जाता है एवं उसकी प्रथम शिक्षित शिक्षक उसकी माता वह घर का वातावरण उसकी प्रथम कक्षा होती है उसके बाद बालक औपचारिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए विद्यालय में प्रवेश लेता है और जहां बालक में शारीरिक मानसिक नैतिक एवं भावात्मक ज्ञान की नींव रखी जाती है विद्यालय एक शिक्षा का गतिशील केंद्र है जो बालक को उसके भाभी जीवन के लिए तैयार करता है उसे एक उपयुक्त वातावरण प्रदान करता है जहां वह अपनी अंतर्निहित शक्तियों का उचित प्रकार से विकास कर सके शिक्षा के वातावरण के संबंध में हक्सले ने कहा है कि शिक्षा का पर्यावरण शिक्षालय द्वारा निर्धारित होता है जिसमें की माली रूपी शिक्षकों की देखने में बालक रूपी पौधे विकसित होते हैं फल स्वरुप वातावरण ही सब कुछ है |

वैसे तो संपूर्ण विद्यालय का वातावरण बालक पर अपना प्रभाव डालता है चाहे वह विद्यालय भवन हो,पुस्तकालय हो, खेल का मैदान शिक्षक व उनका व्यवहार यह सभी उपकरण प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से बालक पर अपना प्रभाव डालते हैं वह उन्हें अनुभव प्रदान करने में सहायक होते हैं |

मनुष्य का शरीर विभिन्न आंतरिक एवं वाह्य अंगों से मिलकर बना है जिसके अपने–अपने महत्वपूर्ण कार्य होते हैं इनमें से अगर किसी अंग या प्रणाली में खराबी आ जाती है तो वह अपने व्यक्तिगत व सामाजिक क्रियाकलापों को सही रूप से नहीं कर पाता है और न ही वह सामान्य प्राणियों की तरह शिक्षा ग्रहण कर पता है हमारे समाज की यह मान्यता है कि व्यक्ति जिसमे निःसक्तता होती है वह उत्पादन कार्य में सहयोग नहीं कर सकते समाज में फैली इस भ्रान्ति को खत्म करना होगा और इस भ्रान्ति को खत्म करने के लिए शिक्षा एक महत्वपूर्ण माध्यम है हमारा संविधान जाति वर्ग, धर्म, आय एवं लैंगिक आधार पर किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं करता और सबके लिए समान शिक्षा की बात करता है इस परिपेक्ष में बच्चों को सामाजिक, जातिगत, आर्थिक, लैंगिक, शारीरिक एवं मानसिक दृष्टि से विभिन्न देखे जाने के बजाए एक स्वतंत्र अधिगमकर्ता के रूप में देखे जाने की आवश्यकता है जिससे एक लोकतांत्रिक समाज में बच्चों के समुचित वातावरण का सृजन किया जा सके सभी विद्यार्थियों को एक द्रष्टि से देखा जाएँ जिसके लिए समावेशी शिक्षा का उदय हुआ समावेशी शिक्षा से तात्पर्य है सभी बालकों को एक साथ एक ही कक्षा में रखा जाएँ लेकिन इनमे से कुछ विधार्थी ऐसे होते है जो विशिष्ट प्रकार के होते है अगर हम विशिष्ट बालकों की बात करे तो विशिष्ट बालक उन बालको को कहा जाता है जो अपनी क्षमताओं व्यवहार और योग्यता सम्बन्धी विशेषताओ की द्रष्टि से सामान्य बालको से भिन्न होते है विशिष्ट प्रकार के बालको में दो प्रकार के बालक आते है एक वह जो अपने क्षमता ,योग्यता के कारण उनकी गिनती उच्च कोटि में होती है या फिर उन्हें निम्न कोटि में रखा जाता है । निम्न कोटी के बालक जो शारीरिक मानसिक सामाजिक और सामाजिक विकास की दृष्टि से काफी पिछड़े होते हैं उन्हें विकलांगता के श्रेणी में रखा जाता है ।

पी. डब्ल्यू. डब्ल्यू .डी .ऐक्ट 1995 में विकलांगता के सात प्रकारों प्रकार बताए गए हैं परंतु आर .पी. डब्ल्यू. डी. ऐक्ट 2016 में विकलांगता के सात प्रकारों को बढ़ाकर 21 कर दिया गया है इन 21 प्रकार की विकलांगताओं में एक मूक–बधिर विकलंगता हैं मूक विकलांगता ऐसा प्राणी विकार है जिसमें वाणी अस्पष्ट अनियमित और शब्दों के स्थान पर केवल ध्वनि के रूप में प्रकट होती है और कानों के द्वारा सुनने में बाधा उत्पन्न योग्यता व्यक्ति विशेष की श्रवण विकलांगता मानी जाती है शैक्षिक दृष्टि से श्रवण विकलांगता ऐसी शारीरिक निर्योग्यता है जो बालक को मौखिक अभिव्यक्ति द्वारा शिक्षा ग्रहण करने पर बाधा उत्पन्न करती है उपर्युक्त दोनों प्रकार की निर्योग्यताओं के कारण बालक मे सुनने तथा अभिव्यक्ति करने की क्षमता नहीं होती है ये बालक सांकेतिक भाषा के माध्यम से समझते हैं ऐसे बालकों को जिनमें दोनों निर्योग्यता पाई जाती हैं मूक–बधिर बालक कहलाते हैं ऐसे बालक ना तो सही से सुन सकते हैं और ना ही स्पष्ट रूप से अपनी बातों को कह सकते हैं सामान्यतः यह देखा गया है जो बालक गूंगे होते हैं वह बहरे भी होते हैं परंतु यह आवश्यक नहीं है जो बहरे हो वह गूंगे भी हो ऐसी दशा में मूक–बधिर बालकों की संप्रेषण क्षमता एवं सुनाई न देने के कारण भाषा एवं वाणी का विकास अच्छी तरह

नहीं हो पता है ऐसे बालक समुदाय परिवार में बोली जाने वाली भाषा सुनने में असमर्थ होते हैं जिससे उनमें सोचने की शक्ति में रुकावट आ जाती ऐसी स्थिति में वह इशारों के माध्यम से बातों को समझने का प्रयास करते हैं शैक्षिक दृष्टिकोण से मूक–बधिर बालकों में बुद्धि एवं स्रजनशीलता अधिक होती है परंतु ऐसे बालकों में गुणात्मक सुधार की आवश्यकता है ऐसे बालकों के लिए विशिष्ट विद्यालयों की स्थापना की गई है जहां शिक्षक उनकी आवश्यकता अनुसार शिक्षण विधियां का चुनाव कर शिक्षण कार्य करते हैं विद्यालय का शैक्षिक वातावरण बालक की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करता है इसलिए विद्यालय का वातावरण प्रभावशाली होना चाहिए क्योंकि विद्यालय वातावरण छात्राओं के शैक्षिक अभिप्रेरणा को प्रोत्साहित करता है जिन विद्यालयों में शिक्षकों के द्वारा बच्चों को प्रेरणा प्रदान की जाती है उन विद्यालयों के बच्चों में शैक्षिक अवधारणा के साथ–साथ उनकी शैक्षिक उपलब्धि में भी सार्थक परिणाम देखने को मिलता है उपर्युक्त कारणों को देखते हुए शोधार्थी ने इस समस्या का चुनाव किया।

संबंधित शोध की समीक्षा-

- गुप्ता निलेश एवं रामकुमार (2016) ने अपने शोध से यह स्पष्ट किया कि शहरी क्षेत्र में रहने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्ध से उच्च है।
- घोष अभिजीत (2017) ने अपने अध्ययन से यह पाया कि शहरी क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों में अध्यनरत छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों में अध्यनरत छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि से उच्च है ।
- तिवारी दुष्यंत (2024) ने अपने शोध में पाया कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों में अध्यनरत श्रवण बाधित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर प्रदर्शित करता है अतः यह पाया गया कि ग्रामीण एवं शहरी दोनों क्षेत्रों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्ध में सार्थक अंतर ।
- डॉक्टर शर्मा देवकीनंदन (2018) ने पारिवारिक वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि के संबंध का अध्ययन किया और पाया की परिवार का वातावरण, परिवार के व्यक्तियों का विद्यार्थी के प्रति व्यवहार आदि उसके शैक्षिक विकास को प्रभावित करता है।
- शर्मा गोपेश (2022) शोधकर्ता ने प्राप्त आँकणों के परिणाम स्वरुप यह पाया की सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यार्थियों की अध्ययन आंदतों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया जबकि उनकी शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया गया ।
- डॉक्टर कुमार मनदीप एवं रिचा (2024) ने इस शोध में शोधकर्ता ने यह पाया की पारिवारिक वातावरण तथा प्रभावात्मक अनुशासनिक व्यवस्था और हस्तक्षेप रहित अनुशासनिक व्यवस्था का उनकी शैक्षिक निष्पत्ति पर पारिवारिक वातावरण एवं दमनात्मक अनुशासनिक व्यवस्था से ज्यादा सार्थक प्रभाव पड़ता है।
- सिंह अमित (2018) शोधकर्ता ने यह निष्कर्ष पाया की माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण का प्रभाव पड़ता है ।
- रेखा रानी एवं हालत सविता (2014) शोधकर्ता ने अपने निष्कर्ष मे घर के परिवेश का छात्रों की गणितीय उपलब्धि में महत्वपूर्ण संबंध पाया।

अध्ययन का शीर्षक-

सरकारी एवं गैर सरकारी विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत श्रवण बाधित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

अध्ययन के उद्देश्य-

- सरकारी एवं गैर सरकारी के विशेष विद्यालयों में अध्यनरत श्रवण बाधित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना ।
- सरकारी एवं गैर सरकारी के विशेष विद्यालयों में अध्यनरत श्रवण बाधित छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- सरकारी एवं गैर सरकारी के विशेष विद्यालयों में अध्ययन श्रवण बाधित छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएं-

- सरकारी एवं गैर सरकारी विशेष विद्यालयों में अध्यनरत श्रवण बाधित विद्यार्थियों के बीच कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।
- सरकारी एवं गैर सरकारी विशेष विद्यालयों में अध्यनरत श्रवण बाधित छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।
- सरकारी एवं गैर सरकारी विशेष विद्यालयों में अध्यनरत श्रवण बाधित छात्राओं की शैक्षिक उपलब्ध में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

शोध विधि – शोधकर्ता द्वारा समस्या की प्रकृति एवं उद्देश्यों के आधार पर वर्णनात्मक अनुसंधान के अंतर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या-

जनसंख्या के रूप में लखनऊ जनपद में स्थित विशेष विद्यालयों मे अध्यनरत श्रवण बाधित विद्यार्थियों को जनसंख्या कर रूप मे लिया गया है।

न्यादर्श-

न्यादर्श के रूप में सोद्देश्य नमूना चयन विधि से न्यादार्श का चयन किया गया है जिसके अंतर्गत लखनऊ जिले के विशेष विद्यालयों मे अध्यनरत श्रवण बाधित विद्यार्थियों का चुनाव किया गया है।

शोध उपकरण -

शैक्षिक उपलब्धि को मापने के लिए श्रवण बाधित विद्यार्थियों के पिछली कक्षा के अंकों को अध्ययन हेतु लिया गया है।

सांख्यिकी विधियां

अध्ययन में आँकणों का विश्लेषण हेतु प्रतिशत विश्लेषण एवं t - मान सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है।

अंकणों का विश्लेषण एवं व्याख्या

1. सरकारी एवं गैर सरकारी विशेष विद्यालयों मे अध्ययनरत श्रवण बाधित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

H0. सरकारी एवं गैर सरकारी विशेष विद्यालयों मे अध्ययनरत श्रवण बाधित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि मे कोई सार्थक अंतर नहीं है।

sr.no.	Marksin percentage	Grade	Gourment school		Private school	
			No.of students	percentage	No.of Students	%
1	80-100	A	3	10%	6	20%
2	60-79	B	8	26.67%	12	40%
3	45-59	C	12	40%	8	26.67%
4	33-49	D	5	16%	4	13.4%
5	Less than 33	E	2	6.67%	0	0%
TOTAL			30	100%	30	100%

सरकारी विशेष विद्यालयों में ए ग्रेड पाने वाले 10%,बी ग्रेड पाने वाले 26.67%, सी ग्रेड पाने वाले 40% एवं डी ग्रेड पाने वाले 6.6% ग्रेड वाले विद्यार्थी पाए गए जबकि गैर सरकारी के विशेष विद्यालयों में ए ग्रेड वाले विद्यार्थी 20%, बी ग्रेड वाले 40%, सी ग्रेड वाले 26.67% प्रतिशत एवं डी ग्रेड वाले 13.4% विद्यार्थी पाए गए दिए गए आँकणों से यह ज्ञात होता है कि सरकारी विद्यालय में ए ग्रेड पाने वाले विद्यार्थियों की संख्या गैर सरकारी वाले विद्यार्थियों से कम है जबकि सरकारी विद्यालय के सी ग्रेड पाने वाले विद्यार्थियों की संख्या गैर सरकारी वाले विद्यार्थियों से अधिक है

सारणी संख्या 2

सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्यनरत श्रवण बाधित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान, मानक विचलन,मानक त्रुटि एवं क्रांतिक अनुपात

sr.no.	Area	N	M	SD	M1-M2	σD	T VALUE	Level of significance
1	Govt.school	30	309.9	44.23	53.16	14.74	3.60	0.5
	Private school	30	363.06	65.92				

व्याख्या -

सारणी 2 में सरकारी एवं गैर सरकारी विशेष विद्यालयों में अध्यनरत श्रवण बाधित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान के बीच अंतर 14.74 है प्रदत्तों के आधार पर मध्यमानों के बीच क्रांतिक अनुपात का परिगणित मान 3.60 है जो की ज सारणी में मुक्तांश (df) 58 पर देखने पर ज का मान 0.5 सार्थकता स्तर पर 2.0 से अधिक है जो की सार्थक है अतः सरकारी एवं गैर सरकारी विशेष विद्यालयों में अध्यनरत श्रवण बाधित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर है अतः पूर्व प्रकल्पित सून्य परिकल्पना को अस्वीकार किया जाता है अतः दोनों क्षेत्रों के श्रवण बाधित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर देखने को मिलता है।

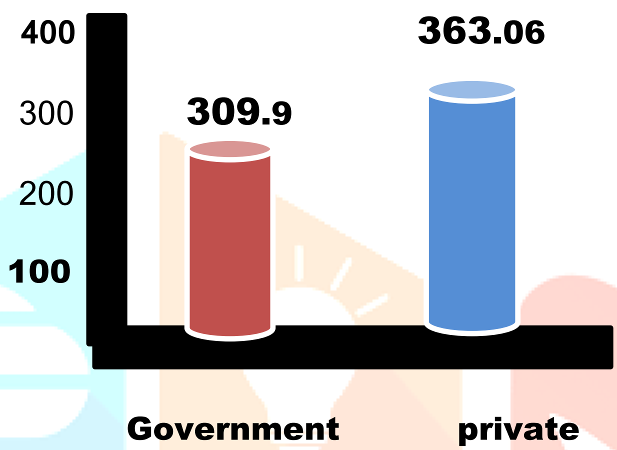

सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत श्रवण बाधित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य मध्यमानों के अंतर का आरेख चित्र

2. सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्यनरत श्रवण बाधित छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

H02. सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्यनरत श्रवण बाधित छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा

सारणी संख्या 3

सरकारी एवं गैर सरकारी विशेष विद्यालयों में अध्यनरत श्रवण बाधित छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का आव्रति वितरण

sr.no.	Marksin percentage	Grade	Government school		Private school	
			No.of students	percentage	No.of Students	%
1	80-100	A	0	0%	1	6.66%
2	60-79	B	3	20%	8	53.34%
3	45-59	C	7	46.66%	4	26.67%
4	33-49	D	4	26.66%	2	13.4%
5	Less than 33	E	1	6.67%	0	0%
TOTAL			15	100%	15	100%

सरकारी विशेष विद्यालयों में ए ग्रेड पाने वाले 0%,बी ग्रेड पाने वाले 20%, सी ग्रेड पाने वाले 40.66%, डी ग्रेड पाने वाले 26.6% एवं 6.67% ई ग्रेड वाले **छात्र** पाए गए जबकि गैर सरकारी के विशेष विद्यालयों में ए ग्रेड वाले **छात्र** 6.67%, बी ग्रेड वाले 53.34%, सी ग्रेड वाले 26.67% प्रतिशत एवं डी ग्रेड वाले 13.4% **छात्र** पाए गए दिए गए आँकणों से यह ज्ञात होता है कि सरकारी विद्यालय में ए ग्रेड पाने वाले **छात्रों** की संख्या 0 गैर सरकारी विद्यालय में 1 छात्र पाया गया जबकि सरकारी विद्यालय के बी ग्रेड पाने वाले विद्यार्थियों की संख्या गैर सरकारी वाले विद्यार्थियों से बहुत कम है जबकि डी ग्रेड पाने वाले सरकारी विद्यालयों के छात्रों की संख्या गैर सरकारी वाले छात्रों से अधिक है।

सारणी संख्या 4

सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्यनरत श्रवण बाधित छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान, मानक विचलन,मानक त्रुटि एवं क्रांतिक अनुपात

sr.no.	Area	N	M	SD	M1-M2	σD	T VALUE	Level of significance
1	Govt.school	15	288.94	40.08	102 .19	18 .5	5 .52	0.5
	Private school	15	391.13	56.47				

व्याख्या – सारणी 2 में सरकारी एवं गैर सरकारी विशेष विद्यालयों में अध्यनरत श्रवण बाधित छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान के बीच अंतर 102.19 है प्रदत्तों के आधार पर मध्यमानों के बीच क्रांतिक अनुपात का परिगणित मान 5.52 है जो की ज सारणी में मुक्तांश ;कद्धि 28 पर देखने पर ज का मान 0.5 सार्थकता स्तर पर 2.05 से अधिक है जो की सार्थक है अतः सरकारी एवं गैर सरकारी विशेष विद्यालयों में अध्यनरत श्रवण बाधित **छात्रों** की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर है अतः पूर्व प्रकल्पित सून्य परिकल्पना को अस्वीकार किया जाता है अतः दोनों क्षेत्रों के श्रवण बाधित **छात्रों** की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर देखने को मिलता है।

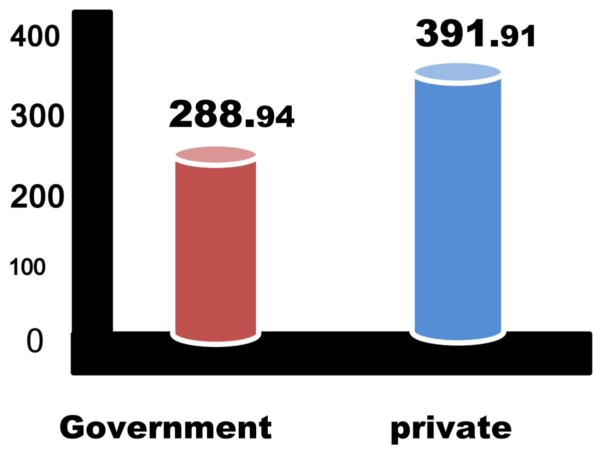

सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत श्रवण बाधित छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य मध्यमानों के अंतर का आरेख चित्र

3 सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्यनरत श्रवण बाधित छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

H03 सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्यनरत श्रवण बाधित छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा

सारणी संख्या 5

सरकारी एवं गैर सरकारी विशेष विद्यालयों में अध्यनरत श्रवण बाधित छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का आव्रति वितरण

sr.no.	Marksin percentage	Grade	Government school		Private school	
			No.of students	percentage	No.of Students	%
1	80-100	A	0	0%	3	20%
2	60-79	B	7	46.66%	9	60%
3	45-59	C	6	40.%	2	13.3%
4	33-49	D	2	13.3%	1	6.67%
5	Less than 33	E	0	0%	0	0%
TOTAL			15	100%	15	100%

सरकारी विशेष विद्यालयों में ए ग्रेड पाने वाली छात्राएं 0%,बी ग्रेड पाने वाली 46.66%, सी ग्रेड पाने वाली 40%, डी ग्रेड पाने वाली 13.3% एवं 0 % ई ग्रेड वाले छात्राएं पायी गयी जबकि गैर सरकारी के विशेष विद्यालयों में ए ग्रेड पाने

वाली छात्राएं 20%, बी ग्रेड पाने वाली 60%, सी ग्रेड पाने वाली 13.3 % प्रतिशत एवं डी ग्रेड वाले 6.67% छात्राएं पायी गयी दिए गए आँकणों से यह ज्ञात होता है कि सरकारी विद्यालय में ए ग्रेड पाने वाली **छात्राओं** की संख्या **0%** जबकी गैर सरकारी वाले विद्यालय में 20% छात्राएं पायी गयी सरकारी विद्यालय में बी ग्रेड पाने वाली **छात्राओं** की संख्या 46.66% के लगभग जबकि गैर सरकारी में या संख्या 60% पाई गई सरकारी विद्यालय में डी ग्रेड पाने वाली छात्राओं की संख्या गैर सरकारी वाली छात्राओं से अधिक पाई गई।

सारणी संख्या 6

सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्यनरत श्रवण बाधित छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान, मानक विचलन,मानक त्रुटि एवं क्रांतिक अनुपात

sr.no.	Area	N	M	SD	M1-M2	σD	T VALUE	Level of significance
1	Govt.school	15	302.06	59.41	89 .08	21 .91	4 .66	0.5
	Private school	15	391.14	56.47				

व्याख्या - सारणी 6 में सरकारी एवं गैर सरकारी विशेष विद्यालयों में अध्यनरत श्रवण बाधित छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान के बीच अंतर 89.08 है प्रदत्तों के आधार पर मध्यमानों के बीच क्रांतिक अनुपात का परिगणित मान 4.66 है जो की ज सारणी में मुक्तांश (df) 28 पर देखने पर ज का मान 0.5 सार्थकता स्तर पर 2.05 से अधिक है जो की सार्थक है। अतः सरकारी एवं गैर सरकारी विशेष विद्यालयों में अध्यनरत श्रवण बाधित छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर है अतः पूर्व प्रकल्पित सून्य परिकल्पना को अस्वीकार किया जाता है अतः दोनों क्षेत्रों के श्रवण बाधित छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर देखने को मिलता है।

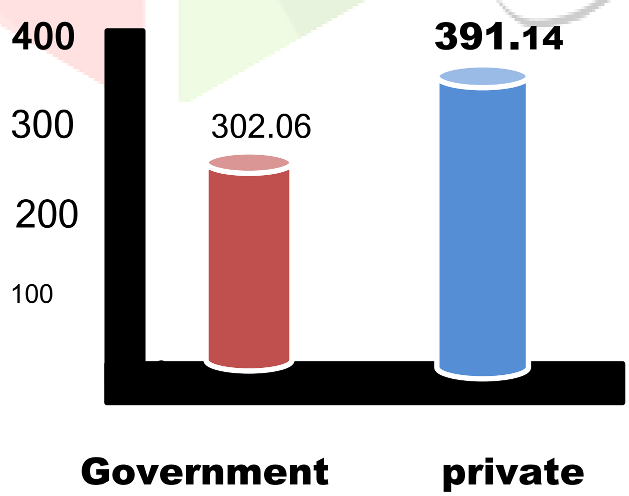

सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत श्रवण बाधित छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य मध्यमानों के अंतर का आरेख चित्र

निष्कर्ष -

- शोध के निष्कर्ष से यह ज्ञात होता है कि ग्रेड ए एवं ग्रेड बी पाने वाले विद्यार्थियों की संख्या सरकारी की अपेक्षा गैर सरकारी विद्यालयों में अधिक है अतः तुलनात्मक अध्ययन से यह ज्ञात होता कि गैर सरकारी विद्यालयों में अध्यनरत श्रवण बाधित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि सरकारी विद्यालयों में अध्ययन करने वाले श्रवण बाधित विद्यार्थियों से उच्च है
- गैर सरकारी विद्यालयों में बी ग्रेड पाने वाले श्रवण बाधित छात्रों की संख्या सरकारी विद्यालय में अध्यनरत श्रवण बाधित छात्रों से अधिक है अतः यह ज्ञात होता है कि गैर सरकारी विद्यालयों में अध्यनरत छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि सरकारी विद्यालयों में अध्यनरत छात्रों से उच्च है
- सरकारी विद्यालयों में अध्यनरत सी ग्रेड पाने वाले श्रवण बाधित विद्यार्थियों की संख्या गैर सरकारी विद्यालयों में अध्यनरत श्रवण बाधित विद्यार्थियों से अधिक है अतः तुलनात्मक अध्ययन से या ज्ञात होता है कि सरकारी विद्यालयों में अध्यनरत छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि गैर सरकारी विद्यालयों में अध्यनरत श्रवण बाधित छात्राओं से निम्न है

संदर्भ सूची-

Dr.Kumar,R.(2023).Samaveshi shiksha ka srajan.Delhi: JTS Publications.

Dr.Mehta,S.S.(2023).Samaveshishiksha.(1ed,vol.1).Maharashtra:Rudra Publications.

Dr.Singh,R.R.(2021).Samaveshi Shiksha dasha evam disha (1ed,vol.1) New Delhi:Kanishk Publishers.

Kothari,C.(2020). Research Methodology(2022ed.).New Delhi: New Age International Publishers.

Kumar, A. (2018). Adjustment pattern among students with specific learning disability.

Patel ,Kusum Lata.(2015).Preferred learning style and academic achievement of children with hearing impairment .

http://Shodhganga.inflibnet.ac.in:hdl.handle.net/10603/283744

डॉ कुलदीप 2019 माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरात विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनातमक अध्ययन इंटरनेशनल जर्नल ऑफ अपलाईड रिसर्च issn online 23945869 www.allresearchjournal.com

Mangal,S.(2009).Shiksha manovigyan (Vol.5).New Delhi: P.H.I. Private Limited

Singh,S.(2005). Shiksha Manovigyan. New Delhi: Sharda Pustak Bhavan.